

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर-2008

प्रश्न पत्र-I

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (अष्टकवर्ग)

1. निम्न कुण्डली के लिए बृहस्पति व शुक्र का भिन्नाष्टक वर्ग बनाए:-
जन्म: 3.1.1955, 2:55 घण्टे, मेरठ, दशाशेष : केतु 5व 11 मा 16दि,
लग्न : तुला 20:45, सूर्य - धनु 18:29, चन्द्र - मेष 02:02 मंगल - कुंभ 17:56, बुध - धनु 23:27, बृहस्पति (व) - कर्क 03:23, शुक्र - वृश्चिक 04:03, शनि - तुला 25:16, राहु - धनु 12:17

2. सोदाहरण व्याख्या करें।

क) त्रिकोण शोधन

ख) एकाधिपत्य शोधन

ग) राशि पिण्ड, ग्रह पिण्ड तथा शोध्य पिण्ड

3. प्रश्न संख्या 1 में दी गई जन्मांश के सर्वाष्टक बिन्दु इस प्रकार है :-

मेष	25	तुला	33
वृष	32	वृश्चिक	23
मिथुन	24	धनु	31
कर्क	28	मकर	23
सिंह	32	कुंभ	32
कन्या	28	मीन	26

क) जातक के जीवन का कौन सा भाव समृद्धशाली होगा व क्यों?

ख) कौन से भाव शुभ अथवा अशुभ है व क्यों?

ग) क्या जातक को जीवन में आय उसके परिश्रम प्रयासों के बराबर, अधिक या कम प्राप्त होगी?

घ) जातक या उसकी पत्नी/पति में से किसका वर्चस्व होगा?

ड) जातक के जीवन में अशुभ घटनाएं कब-कब घट सकती हैं?

4. अष्टकवर्ग पद्धति में आयुगणना की प्रक्रिया व उसका आधार क्या है? चर्चा करें।

5. यह व राशि गुणाकर से क्या तात्पर्य है? अष्टकवर्ग में इनका उपयोग बताइये।

भाग-II (प्रश्न कुण्डली)

6. संक्षेप में चर्चा करें :-

क) प्रश्न कुण्डली में यह कैसे पता लगाएंगे कि प्रश्नकर्ता का उद्देश्य सफल होगा?

ख) प्रश्न कुण्डली की आवश्यकता तथा महत्व के बारे में तर्क सहित अपने विचार बताएं।

7. क) निम्न प्रश्न एक मुकदमे के संदर्भ में किया गया जिसका फैसला 19.9.08 को होना था। प्रश्न 17.8.08 को 11.00 बजे प्रातः दिल्ली में किया गया। किस प्रकार का फैसला होने की संभावना है?

लग्न - तुला 7:14, सूर्य - सिंह 00:42, चन्द्र - कुंभ 4:48
मंगल - कन्या 4:38, बुध - सिंह 17:53, गुरु (व) - धनु 19:19
शुक्र - सिंह 19:36, शनि - सिंह 15:42, राहु - मकर 24:36

ख) "मैं साक्षात्कार के लिए जा रहा हूँ। क्या मुझे सफलता प्राप्त होगी?" यह प्रश्न 20.4.2008 को 17.30 बजे दिल्ली में किया गया। आपका क्या उत्तर होगा? कारण सहित बताएं।

लग्न - कन्या 20:14, सूर्य - मेष 6:48, चन्द्र - तुला 7:32
मंगल - मिथुन 26:00, बुध - मेष 11:35, गुरु - धनु 27:50
शुक्र - मीन 23:37, शनि (व) - सिंह 7:51, राहु - कुंभ 1:35

8. एक उदाहरण सहित किन्हीं चार पर संक्षेप में टिप्पणी लिखें :-

- क) इत्थसाल योग
- ख) कम्बूल योग
- ग) मनाऊ योग
- ध) रदद योग
- ड) इकबाल योग

9. क) गुम हुए व्यक्ति की परिस्थिति का अवलोकन किस प्रकार करेंगे? अपना मत निम्न जातक के घर छोड़कर जाने के पश्चात् बनी प्रश्न कुण्डली के आधार पर करें। क्या जातक की वापसी की संभावना है यदि हाँ तो कब तक? प्रश्न समय - 28.04.2008, 17:08 बजे, दिल्ली

लग्न - कन्या 22:19 सूर्य - मेष 14:35 चन्द्र - मकर 13:21

मंगल - कर्क 00:03 बुध - मेष 28:02 गुरु - धनु 28:12

शुक्र - मेष 03:28 शनि (व) - सिंह 07:43 राहु - कुंभ 00:33

ख) गुम हुई वस्तु की स्थिति की गणना किस प्रकार करते हैं? निम्न चोरी संबंधी प्रश्न कुण्डली पर अपना मत दें। क्या वस्तु मिलने की संभावना है? यदि हाँ तो कब तक।

प्रश्न समय : 17.08.2008, 11:45 प्रातः दिल्ली

लग्न - तुला 16:56, सूर्य - सिंह 00:44, चन्द्र - कुंभ 05:12

मंगल - कन्या 04:39, बुध - सिंह 17:56, गुरु (व) - धनु 19:19

शुक्र - सिंह 19:38, शनि - सिंह 15:42, राहु - मकर 24:36

10. निम्न का उत्तर दें :-

क) एक से अधिक प्रश्नों का उत्तर प्रश्न ज्योतिष में किस प्रकार दिया जाता है?

ख) चर्चा करें कि प्रश्न में कौन सी दृष्टि प्रयोग करनी चाहिए - पराशरी या ताजिक

ग) यह किस प्रकार निष्कर्ष निकालेंगे कि वस्तु गुम हुई है या चोरी हुई है? कम से कम दो योग बताएं।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

प्रश्न पत्र-II

समय : 3 घंटे

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (षडबल)

1. निम्न कुण्डली में स्थान बल की गणना करें।
जन्म समय - 12.10.1972, 7:10 बजे, कानपुर (उ.प्र.)
लग्न - तुला 08:36, सूर्य - कन्या 25:20, चन्द्र - वृश्चिक 17:14
मंगल - कन्या 13:41, बुध - तुला 10:30, गुरु - धनु 08:23
शुक्र - सिंह 14:15, शनि (व) - वृष 27:02, राहु - धनु 27:54
केतु - मिथुन 27:54
2. संक्षिप्त में लिखें :-
क. षडबल ख. इष्ट और कष्ट बल ग. काल बल
3. प्रश्न 1 में दी कुण्डली में पक्ष बल की गणना करें।
4. प्रश्न 1 में दी कुण्डली में दिक् बल की गणना करें।
5. क) ग्रह युद्ध क्या है? फलित ज्योतिष में इसकी क्या महत्ता है?
ख) राहु व केतु को षडबल में क्यों सम्मिलित नहीं किया है? कारण बताएं।

भाग-II (फलित ज्योतिष)

6. किन्हीं दो पर चर्चा करें :-
क) भावात् भावम नियम की उदाहरण सहित व्याख्या करें?
ख) दशम भाव व दशमेश का महत्त्व समझाएं।
ग) भाव निर्णय में भावाधिपति बल, भाव दिक्बल और भाव दृष्टि बल की तुलनात्मक महत्ता बताएं? उदाहरण सहित समझाएं।
7. निम्न कुण्डली का अध्ययन कर दशम भाव पर चर्चा करें, जातक ने कर्म क्षेत्र में क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की? कारण सहित बताएं।
जन्म समय : 28.8.1936, 15:57 बजे, चिकमंगलूर, दशाशेष : शुक्र 11व 10 म. 8दि.
लग्न - धनु 28:52 सूर्य - सिंह 11:56, चन्द्र - धनु 18:46
मंगल - कर्क 18:36 बुध - कन्या 7:53 गुरु - वृश्चिक 22:03
शुक्र - सिंह 28:25, शनि (व) - कुंभ 27:15, राहु - धनु 08:32
केतु - मिथुन 08:32
8. वर्ग कुण्डलियों की क्या महत्ता है? प्रश्न 7 में दी कुण्डली के नवांश व दशांश पर चर्चा करें।
9. पंच महापुरुष योग क्या है? उनका महत्त्व समझाएं। प्रश्न 7 में दी कुण्डली क्या इनमें से कोई योग बन रहा है? यदि हाँ तो उस योग से जातक को क्या लाभ मिले होंगे?
10. क) किसी भाव के विवेचन किन तथ्यों का प्रयोग करेंगे?
ग) राहु व केतु सभी भावों को कैसे प्रभावित करते हैं?

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. निम्न योगों का अल्पायु, मध्यायु व पूर्णायु में वर्गीकरण करें :-

- शुभ ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में तथा बली शनि छठे भाव में या पाप ग्रह अष्टम में हो।
- अष्टमेश उच्च राशिस्य हो।
- षण्णभार भावों में अशुभ ग्रह।
- लग्नेश और अष्टमेश बारहवें या छठे भाव में।
- शनि लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के साथ केन्द्र में हो।
- निर्बल गुरु लग्न में तथा पाप ग्रह त्रिकस्थान में हो।
- सूर्य व शनि राशि परिवर्तन में हो।
- पापग्रह उपचय भावों में तथा शुभ ग्रह केन्द्र में हो।
- बली लग्नेश त्रिकोण में व कोई अशुभ दृष्टि न हो।
- अष्टम भाव में एक पापग्रह व उस पर पापग्रह की दृष्टि हो।

अथवा

क. महर्षि पराशर द्वारा दिए गए आयुर्दाय गणना के नियम बताएं?

ख. बालारिष्ट क्या है? यह किस स्थिति में भंग होता है?

2. निम्न कुण्डली के लिए अंशायु की गणना करें :-

जन्म 20.8.1944, 08.02 बजे, मुम्बई : दशा शेष - शुक्र 16व 5मा 19दि

लग्न - सिंह 12:30, सूर्य - सिंह 03:49 चन्द्र - सिंह 17:05

मंगल - कन्या 01:12, बुध - सिंह 28:34, गुरु - सिंह 12:12

शुक्र - सिंह 18:39, शनि - मिथुन 14:13, राहु-कर्क 04:24

3. किन्हीं तीन पर उदाहरण सहित चर्चा करें :-

i) छिद्र ग्रह ii) क्रूरदय हरण

iii) मिथुन व वृश्चिक लग्न के मारक ग्रह iv) दिन मृत्यु और दिन रोग

4. निम्न जन्म कुण्डली का अध्ययन कर समझाए कि यह अल्पायु वर्ग में आती है अथवा नहीं। यदि हाँ तो अल्पायु के योग बताएं।

जन्म - 2.11.1935, दशा शेष - शुक्र 8व 1मा 4दि.

लग्न - तुला 5:59, सूर्य - तुला 15:41, चन्द्र-धनु 21:12

मंगल - धनु 10:11, बुध - कन्या 27:06, गुरु - वृश्चिक 05:29

शुक्र - कन्या 00:13, शनि(व) - कुंभ 10:34, राहु - धनु 22:00

5. कौन से नियम पूर्णायु दर्शाते हैं? उदाहरण सहित दिखाएं।

भाग-II (ज्योतिष और चिकित्सा)

6. सत्य या असत्य लिखे :-

- i) अशुभ सूर्य व चन्द्रमा से कान की समस्या होती है।
- ii) अशुभ शनि व मंगल से आँखों की समस्या होती है।
- iii) हड्डियों का कैंसर शुक्र व चन्द्र से होता है।
- iv) चन्द्र, सूर्य व चतुर्थेश पर अशुभ प्रभाव हृदय रोग दर्शाता है।
- v) गर्भाधान का पहले माह पर शुक्र का अधिकार होता है।
- vi) गर्भाधान के छठे माह पर बृहस्पति का अधिकार होता है।
- vii) बुध, चन्द्र व मंगल के कारण मिरगी के दौरे पड़ते हैं।
- viii) यदि अष्टम भाव पापकर्तरी में हो तो आँखों की समस्या होती है।
- ix) मंगल व बुध के कारण माइग्रेन होता है।
- x) बृहस्पति के कारण यकृत में बिमारी होती है।

अथवा

चिकित्सा ज्योतिष में सभी भावों का महत्त्व समझाएं। बारह राशियाँ शरीर के किन भागों को दर्शाती हैं?

7. तीसरे, छठे, नौवें व बाहरवे भाव शरीर के किस अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। व मंगल, बृहस्पति व शनि के कारण से कौन से रोग होते हैं?

8. निम्न जातक का हृदय व आँख का आप्रेशन हुआ व उसके पश्चात् स्नायु रोग व स्पोडलाइटिस से ग्रस्त रहे। निम्न जन्म पत्रिका में यह किस प्रकार दिखाई देता है।

जन्म - 24.10.1922, दशा शेष - केतु 6व 6मा 14दि.

लग्न - मेष 9:35, सूर्य - तुला 07:32, चन्द्र - धनु 00:49

मंगल - मकर 02:54, बुध - कन्या 21:53, बृहस्पति - तुला 06:43

शुक्र - वृश्चिक 14:47, शनि - कन्या 20:19, राहु - कन्या 05:12

9. निम्न के कुछ योग बताएं।

क. बहरापन ख. लकवा ग. पिलिया घ. मुधमेह

10. संक्षिप्त में लिखें :-

क) चिकित्सा ज्योतिष में 22वें द्रेष्काण, चन्द्र से 64 वे नवांश के अधिपति व सर्प द्रेष्काण का क्या महत्त्व है?

ख) वक्री ग्रहों का चिकित्सा ज्योतिष में महत्त्व।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

प्रश्न पत्र-IV

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (दशा पद्धति)

1. शनि-शुक्र दशा के सामान्य फल पर चर्चा करें तत्पश्चात् यह बताएँ कि इस दशा में निम्न कुण्डली में क्या विशेष फल होंगे?
जन्म 14.12.1946, 9.24 बजे दिल्ली, दशा शेष : केतु 0व 5मा 1दि
लग्न - मकर 0:49, सूर्य - वृश्चिक 28:27, चन्द्र - सिंह 12:31
मंगल - धनु 4:25, बुध - वृश्चिक 8:19, बृहस्पति - तुला 23:53
शुक्र - तुला 24:40, शनि (व) - कर्क 15:16, राहु - वृषभ 17:52
राहु - वृषभ 17:52
2. उपरोक्त जातक का विवाह 29.9.1974 को सम्पन्न हुआ व मृत्यु जून 1980 में हुई। जिन दशाओं में घटनाएँ हो सकती हैं, वे दशाएँ ज्ञात करें व कारण सहित इन दशाओं में उक्त घटनाओं का ज्योतिषीय विवेचन करें।
3. किन्हीं 3 पर टिप्पणी लिखें :-
 - क) छिद्र दशा
 - ख) दशा फल जब दशा व अन्तरदशा 3-11, 6-8 व 7-7 हो
 - ग) ग्रह अवस्थाओं के परिणाम स्वरूप दशा फल
 - घ) वक्री ग्रहों का दशाफल
4. विशोत्तरी दशा पद्धति के मुख्य नियामक नियमों पर विचार प्रकट करें।
5. सत्य या असत्य बताएं :-
 - i) शुभ स्थिति में सूर्य महादशा मान व धन देती है।
 - ii) अशुभ स्थिति में चन्द्र महादशा दुख देती है।
 - iii) कर्क के बृहस्पति द्वारा दृष्ट मकर स्थित मंगल की दशा भूमि व धन प्रदान करेगी।
 - iv) अशुभ बुध की महादशा में जातक को विदेश विस्थापित करेगी।
 - v) अशुभ बृहस्पति की महादशा में मान वैभव प्राप्त होगा।
 - vi) शुभ केतु की दशा में क्रूर साधनों से धन प्राप्त होता है।
 - vii) नवम राहु की दशा में जातक तीर्थ यात्रा करता है।
 - viii) तुला का शनि अपनी दशा में जातक को गाँव या शहर का मुखिया बनाता है।
 - ix) अशुभ शुक्र की दशा में धन वैभव का अभाव रहता है।
 - x) चन्द्र व शनि की एक दूसरे की दशा/अन्तरदशा मानसिक व आर्थिक तंगी से सामना कराती है।

भाग-II (घटनाओं का समय निर्धारण व गोचर)

6. "कुण्डली का सामर्थ्य घण्टे की सुई के समान, दशा मिनट की सुई व गोचर सेकंड की सुई के समान होता है" इस कथन के मर्म को समझते हुए गोचर की महत्ता पर चर्चा करें।

या

पर्याय पद्धति का प्रयोग करते हुए गुरु के गोचर का जीवन काल में होने वाले प्रभावों पर चर्चा करें।

7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-

क. नक्षत्र वेध

ख. मूर्ति निर्णय

ग. गोचर फलादेश में लग्न का महत्त्व

घ. विपरीत वेध

8. नीचे एक महिला की कुण्डली दी गई है। अध्ययन कर यह ज्ञात करें कि वे कब मंत्री बनीं व उनका विवाह कब हुआ।

जन्म - 26.08.1956, 5 बजे प्रातः, दिल्ली, दशा शेष - केतु 6व 9मा 24दि

लग्न - कर्क 26:34, सूर्य - सिंह 9:26, चन्द्र - मेष 0:22

मंगल(व) - कुंभ 28:52, बुध - कन्या 6:04, गुरु - सिंह 16:44

शुक्र - मिथुन 23:45, शनि - वृश्चिक 3:27, राहु - वृश्चिक 10:66

9. दशा और अन्तरदशा में सम्भावित घटनाओं पर गोचर का क्या प्रभाव होता है? विवाह के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करें।

10. अष्टकवर्ग की मदद से आप घटनाओं का समय किस प्रकार ज्ञात करते हैं? समझाए।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

समय : 3 घण्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. क. जैमिनी ज्योतिष के प्रमुख सिद्धान्तों की व्याख्या करें।
ख. प्रश्न 2 में दी कुण्डली के लिए ग्रह भाव बल की गणना करें।
2. निम्न कुण्डली के लिए चर दशा की गणना करें व इस दशा के आधार पर निम्न घटनाओं की पुष्टि करें :-

क. कार्य प्रारम्भ किया : अप्रैल 1984

ख. एम फिल डिग्री प्राप्त की : सितम्बर 1988

जन्म 25 नवम्बर 1960, 7:15 बजे, लखनऊ

लग्न - वृश्चिक 17:35, सूर्य - वृश्चिक 09:29 चन्द्र - कुम्भ 02:00

मंगल (व) मिथुन 02:00, बुध - तुला 19:45, गुरु - धनु 12:28

शुक्र - धनु 18:24, शनि - धनु 22:14, राहु - सिंह 18:27

3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-

क. उपपद और वैवाहिक जीवन ख. कारकाश से चतुर्थ भाव में ग्रह

ग. होरा लग्न व वरनद लग्न का प्रयोग घ. कक्षा हास और कक्षा वृद्धि

4. स्थिर दशा और त्रिकोण दशा में भेद बताएं?

5. प्रश्न 2 में दी कुण्डली के लिए स्थिर दशा, रुद्र और महेश्वर की गणना करें।

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. निम्न जातक की कुण्डली का अध्ययन कर वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डालें :-

जन्म : 23.11.1972, 2:10 बजे, पणजी (गोआ), शेष : मंगल 1व 4मा 5 दि

लग्न - कन्या 02:20, सूर्य - वृश्चिक 07:10, चन्द्र - मिथुन 04:06

मंगल - तुला 11:16, बुध - वृश्चिक 14:51, गुरु - धनु 15:38

शुक्र - तुला 04:26, शनि - वृषभ 24:56, राहु - धनु 24:11

7. विवाह के लिए कुण्डली मिलान में ध्यान देने योग्य तथ्यों पर विस्तार से चर्चा करें।

8. उत्तर दें :-

क. सुखी विवाह के पांच योग

ख. बहु विवाह के पांच योग

9. निम्न का उत्तर दें :-

क. सप्तम स्थान में उच्च का मंगल

ख. अष्टम स्थान में नीच का मंगल

ग. लग्न में राहु

घ. सूर्य व शुक्र की एक ही भाव में स्थिति

10. क. विवाह में विलम्ब के कोई पांच योग बताएं।

ख. उपरोक्त योगों को निम्न जातक की कुण्डली पर लगाते हुए यह बताएं की जातक का विवाह कब हुआ?

जन्म : 17.6.1976, 00:55 घण्टे, चेन्नई, मंगल - 2व 11मा 23दि

लग्न - मीन 14:30, सूर्य - मिथुन 02:12, चन्द्र - कुम्भ 01:01

मंगल - कर्क 24:27, बुध - वृषभ 09:16, गुरु - मेष 25:38

शुक्र - मिथुन 01:50, शनि - कर्क 07:43, राहु - तुला 18:02

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर-2008

प्रश्न पत्र-VI

समय : 3 घण्टे

कुल अंक : 50

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं। (भाग 1 का उत्तर देते हुए जहाँ तक हो सके पराशरी और जैमिनी, दोनों पद्धतियों का प्रयोग करें।)

भाग-I (फलादेश की मिश्रित एवं उच्च तकनीक)

1. निम्न जातक के कर्म क्षेत्र पर चर्चा करें व यह बताए कि जातक विदेश में बसा है अथवा नहीं?

जन्म : 28.8.1965, 9:15 बजे, आगरा, दशा शेष - सूर्य 4व 3मा 17दि
लग्न - कन्या 24:46, सूर्य - सिंह 11:15, चन्द्र - कन्या 00:26

मंगल - तुला 11:30, बुध - कर्क 24:38, गुरु - मिथुन 03:44

शुक्र - कन्या 16:54 शनि(व) - कुंभ 21:10, राहु - वृषभ 16:17

2. प्रश्न 3 में दी गई कुण्डली के जातक के वैवाहिक जीवन पर चर्चा करें। क्या इस जातक का प्रेम विवाह हुआ है?

3. विदेश में विद्यार्जन के पांच योग लिखें। निम्न कुण्डली में यह चर्चा करें कि जातक विद्यार्जन के लिए विदेश गया या नहीं?

पुरुष, जन्म-7.8.1963, 21:15 बजे, 84पू. 01/21उ. 28,

देश शेष - राहु 0व 0मा 8 दिन

लग्न - मीन 14:09, सूर्य - कर्क 21:05, चन्द्र - कुंभ 19:59

मंगल - कन्या 13:41, बुध - सिंह 13:23, गुरु - मीन 26:08

शुक्र - कर्क 14:56, शनि(व) मकर 26:50, राहु - मिथुन 26:46

4. सन्तान न होने के कुछ योग लिखें। प्र. 3 में दी कुण्डली का सप्तांश बना कर बताए कि क्या जातक की संतान है?

5. निम्न के पाँच योग लिखें :-

क. पदोन्नति ख. बार बार विदेश यात्रा ग. अचल सम्पत्ति प्राप्त करना।

भाग-II (मेदनीय ज्योतिष एवं मौसम विज्ञान)

6. वर्ष 2008 के लिए आर्द्रा प्रवेश कुण्डली बनाए। इस कुण्डली को मेदनी ज्योतिष में कैसे प्रयोग किया जाता है?

7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें (किन्हीं तीन पर)

क. बम धमाकों के ज्योतिषीय कारण

ख. देश में बाढ़ आने के ज्योतिषीय कारण

ग. शेयर बाजार में उतार चढ़ाव के ज्योतिषीय कारण

घ. सप्त नाड़ी चक्र

8. ग्रहण का मेदनी ज्योतिष पर क्या प्रभाव है? क्या यह देश को प्रभावित करेगा यदि माह में दो ग्रहण हो (1.8.08 को सूर्य ग्रहण व 16.8.08 को चन्द्र ग्रहण)?

9. बृहस्पति के मकर में गोचर का बाजार व कीमतों पर क्या प्रभाव होगा?

10. निम्न का उत्तर दें :-

क. मंगल शनि योग के प्रभाव ख. रेल दुर्घटना के योग